प्रश्न:- बोली और भाषा में अंतर स्पष्ट करें।

उत्तर:- भाषा और बोली में तात्विक दृष्टि से कोई अंतर नहीं है क्योंकि भाषा में भी चार घटक हैं - ध्वनि, शब्द, वाक्य एवं अर्थ और बोली में भी चार ही घटक हैं - ध्वनि, शब्द, वाक्य एवं अर्थ। भाषा में भी रूढ़ शब्द हैं, ध्वनि प्रतीक हैं, उसकी अपनी एक व्यवस्था है और उसका एक प्रमुख प्राकार्य (function) है सम्प्रेषण और बोली में भी ये सारी विशेषताएँ मिलती हैं। इसलिए सैद्धांतिक दृष्टि से भाषा और बोली में भिन्नता नहीं है, भिन्नता है व्यवहार और प्रयोग के स्तर पर। ग्रियर्सन ने कहा है कि भाषा और बोली में वैसा ही अंतर है जैसा पहाड़ और पहाड़ी में है, फूल और कली में है। इस लिहाज से भाषा और बोली में प्रमुख अंतर हैं:-

(1) भाषा का क्षेत्र व्यापक होता है और बोली का अपेक्षाकृत सीमित अर्थात् भाषा दूर-दूर तक बोली जाती है और बोली अपेक्षाकृत कम दूर तक।

(2) एक भाषा क्षेत्र में कई बोलियाँ होती हैं लेकिन एक बोली क्षेत्र में कई भाषाएँ नहीं होती।

(3) एक भाषा क्षेत्र में पायी जाने वाली बोलियों के वक्ता प्रायः एक दूसरे को समझ लेते हैं लेकिन विभिन्न भाषाओं के वक्ता परस्पर एक-दूसरे को नहीं समझ पाते अर्थात् एक भाषा क्षेत्र की बोलियों में परस्पर बोधगम्यता होती है लेकिन विभिन्न भाषाओं में बोधगम्यता नहीं होती।

(4) भाषा मानकीकृत होती है जबकि बोली में भाषागत विकल्पन अधिक होता है।

(5) भाषा औपचारिक प्रयोजनों का माध्यम होती है और बोली अनौपचारिक संदर्भ में प्रयुक्त होती है।

(6) भाषा में सामाजिक प्रतिष्ठा का अनुभव होता है जबकि बोली में आत्मीयता का।

(7) भाषा बोलियों के बीच में सम्पर्क भाषा का काम करती है और बोली सिर्फ बोल-चाल तक सीमित होती है।

(8) भाषा का प्रयोग साहित्य रचना, शासन, पत्र-पत्रिका, न्यायपालिका आदि में होता है और बोली का व्यवहार सिर्फ मातृभाषा के रूप में।